ISSN 2250-169X

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education For All Subjects

VISION
RESEARCH REVIEW

CHIEF EDITOR

DR. BALAJI KAMBLE

Issue : XIX, Vol. V
VISION RESEARCH REVIEW
IMPACT FACTOR 6.014
ISSN 2250-169X
June 2020 To Nov. 2020

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	Sachh Bharat Abhiyan, jan dhan Yojana, Aadhar Card linking & Industrial Growth **Dr. Shivraj R. Patil**	1
2	Broken Images of Women in Attia Hosain's 'Sunlight on a Broken Column' **R. H. Sagar**	9
3	A Study of Classroom Challenges of Teachers in the Present Education Scenario **Somnath K. Pachling**	16
4	Nutritional Problems in rural Community of Latur Districts Children **Vijaykumar Govindrao Birajdar**	22
5	खेळत्या भांडवलाबाबत अकोला जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँकेची महाराष्ट्रातील इतर जिल्हा मध्यवर्ती सहकारी बँकेशी तुलना **सुनिल हरिभाऊ पांडे**	30
6	पर्यटनाचे नवीन परिमाण - ग्रामीण पर्यटन **भारती टी. ठाकरे, डॉ. डी. बी. शिंदे**	35
7	भारतीय कृषी अर्थव्यवस्थेवर कोविड-१९ का प्रभाव **डॉ. अलका अनिल मानकर**	39
8	भारतीय संगीत और अध्यात्म **संतोष नारायणराव वावगे**	44
9	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची धर्म चिकित्सा **सुनिल मल्हारी वाघमारे**	49

Issue : XIX, Vol. V
VISION RESEARCH REVIEW
IMPACT FACTOR 6.014
ISSN 2250-169X
June 2020 To Nov. 2020

7

भारतीय कृषी अर्थव्यवस्थेवर कोविड-१९ का प्रभाव

डॉ. अलका अनिल मानकर
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
श्री. पुडलिक महाराज महाविद्यालय,
नांदूरा रेल्वे, जि. बुलढाणा

Research Paper - Economics

भारत प्राचीन काल से ही एक कृषिप्रधान देश रहा है। आज देश मे कृषी एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है। भारत मे ही नही तो पूरे विश्व में कृषी एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय रहा है। क्योकी यह मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओ की पूर्ती का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। आज बवअपक–१९ से बचने के लिए भारत भर लॉकडाऊन किया गया है। लॉकडाऊन के कारण देशभर मे लोग अपने घर मे बंद है। लेकिन लोगो के लिए सबसे बडी जरुरत भोजन की है और वह भी बार– बार आज सभी लोग अलग अलग व्यंजनो का मजा ले रहे है।

इस कठीण समय का आधार बन गई हमारी कृषी भारतीय अर्थव्यवस्था कृषी का महत्व आज बढ गया है। कृषी भारत का सबसे महत्वपूर्ण व्यवसाय है । सदैव रहेंगा और इस महामारी के बाद तो और भी बढनेवाला है। भारत के आर्थिक विकास की कोई भी योजना तब तक सफल नही होती जब तक कृषिके विकास की व्यवस्था न की गई हो । Covid–१९ के इस कठीण समय मे शहरो के मजदुरो ने गाव लौटने का फैसला इस लिये लिया कि अपने लोगों के बीच के नही रहेंगे। आज किसान एक ऐसा योद्धा है जिसके दम पर भारत देश कोरोना जैसी महामारी से लढ रहा है। देश मे अगर अन्न भंडार न होते तो कोरोनाव्हायरस से ज्यादा मौते भूक से होती। नि:संदेह भारतीय अर्थव्यवस्था में शुरु से हि कृषी का स्थान महत्वपूर्ण है। किंन्तु इधर कुछ वर्ष में उद्योग के लिए कृषी के महत्व में गिरावट हुई है । इसका कारण यह है कि अब देश में ऐसे अनेक उद्योग विकसित हो चुकी है। जो अपने विकास हेतू कृषी पर आश्रीत नही है।

इनमे प्रमुख लोहा इस्पात, रसायन, मशिने, अवजार अन्य इंजिनिरिंग उद्योग आदी है। देश में आद्योगिक विकास के साथ हमारी राष्ट्रीय आयमें खुशी का प्रतिशत कम हुआ है। कृषिका आंतरराष्ट्रीय व्यापार में महत्वपूर्ण स्थान है। कृषी भारत अर्थव्यवस्था का अवलंबन है। राष्ट्रीय विकास हेतू इसे सन्मान जनक स्थान प्रदान कना होगा। कोरोना महामारी के पहले लोग ग्रामीण क्षेत्रोसे शहरी क्षेत्रो कि और पलायन करते थे क्योकि, कृषी क्षेत्र में उत्पादन से प्रांरभ होकर अंतरक अनेक समस्या बढने लगी।

अ) कृषी उत्पादकता का स्तर

ब) कृषी में सार्वजनिक विनियोक का स्तर

क) आयात से मात्रात्मक प्रतिबंध हरा लेणे से उत्पन्न हुई स्पर्धात्मक स्थिती

ड) विकसित देशोंमे कृषी अनुदान जारी रखने कि प्रवश्त्ती

इ) खाद्य तथा कृषी आदान अनुदान में वश्ध्दी आदि परंतु उन्नत बीज उर्वरक एवंम किटकनाशको के सुनिश्चित क्षेत्र में (सिंचाई सुविधाएँ सुलभ) प्रयोग आधारित नयी कृषी रणनीती अपनाने के पश्चात सरकार का कृषी क्षेत्र में हस्तक्षेप बढा है। इस कथन में सच्चाई है। किंतु देश के निवासीयोकी निर्धनताका कारण कृषी कि पिछडी हुई अवस्था है । कृषि की पिछडी हुई अवस्था के कारण भारतवासी निर्धन है। और उनकी निर्धनता के कारण, कृषी पिछडी दशा में है ।

यह एक कु चक्र है जिसके कारण देश के गाव के लोग अपने स्वास्थ्य को बचाने के लिए गाव लौटने का फसाला कर रहे है। लॉकडाऊन उसी समसय हुआ जब रब्बी फसल कि कटाई का समय है। इस साल बे बारीश के बावजूद फसल अधिक होने कि उम्मीद थी। लेकीन लोग घरो में बंद है । हॉटेल, रेस्टारंट बंद है। ऐसे में सब्जी और फलो कि मांग नही रही है। बहोत किसानों ने फसल जनावारो खिला दी, पोल्ट्री उत्पादक बरबाद हो गये। दुध, फुल, अंडी, मास, मच्छी कें बाजार बंद हो गये, लेकीन लॉकडाऊन के पहले दौर में कृषी क्षेत्र के बुरी तरह प्रभावित होने के बावजुद ऐसा जताया रहा है, कि तुलनात्मक रुप से कृषी कि स्थिती बेहतर है। अब सवाल उठ रहा है, क्या यह महामारी कृषी क्षेत्र के बारेमें हमारा नजरिया बदल देगी? सरकारी नितीमें कृषी को महत्व दिया जाएगा, शिक्षा और स्वास्थ्य पर सरकार का जोर बढेगा, पर क्या कृषी को ही उतनाही महत्व मिलेगा, इन सवालोपर गंभीर विचार विमर्श होना चाहिए क्योकी Covid–१९ के बाद नितियोंमे बदलाव कृषी का भविष्य तय करेगा। पिछले कई दशकोसे खेती को उपेक्षित किया गया है। कृषी क्षेत्रोंमें जहां व्यापक बदलाव और भारदी निवशकि जरुरत है। वही किसानों को लाभकारी मूल्य और मासिक आय कि

जरुरत है। फसलोका उचित मूल्य मिलना जरुरी है। Covid–१९ के बाद कृषक का साथ, सबका विकास, सबका विश्वास यह हमारा लक्ष्य होणा चाहिए। यह ऐसा विचार है जिसका समय आज आ चुका है। इस महामारी के समय हमारे किसान भाई–बहन, डॉक्टर और पुलिस की तरह हमारी रक्षा कर रहे है। खेतोमें दिन रात मेहनत कर रहे है । और इस बात कि सब्जीया अनाज दे रहे है। लॉकडाऊन जैसा जैसा बढता रहा, है वैसे खुशी का महत्व बढता गया। सबको कृषी कि याद आई और कहने लगे कि अब कृषी ही एक ऐसी उम्मीद है । जो अर्थव्यवस्था में नई जान फुंकणे का कार्य करेगी । देश कि अर्थव्यवस्था में कृषी का योगदान लगभग १७ प्रतिशत है। इसकी वश्ध्दी दर भी २.८ प्रतिशत है। लॉकडाऊन के कारण किसानों का २० हजार करोड रुपया का घाटा हुआ मांग में कमी और खरीददार ना होने के कारण फल और सब्जियों के दाम किगरे है। दुध कि मांग में चाय, हलवाई कि दुकान, शादी, समारोह, पर्यटन अन्य आयोजनों के रुक जाने के कारण भारी कमी आई। कोरोना व्हायरस कि अफवाह के कारण मुर्गी पालन किसानों का बडा नुकसान हो रहा है । निर्यात रुकने के कारण किसान को दाम नही मिल पा रहा है।

किसान एक ऐसा कर्मा योध्दा है, जो भूख रहकर लोगो को खिला रहा है। महामारी के कारण सभी लोग डर कर घर मै बठे है। वही हमारा किसान जान हथेली पर रखकर देश के लिए अन्न उत्पादन कर रहा है। लेकीन कृषी एक ऐसा व्यवसाय है, जो लंबे समय से घाटे मै है। समाज के लोग बेटी के रिश्ते के समय किसान लडके को पसंद नही करते थे इतनी उदासीनता कृषी व्यवसाय कें बारे मे समाज मे थी। कई हमारे किसान भाईयों ने नुकसान के कारण आत्महत्या कर ली। इसलिए आज हमे सच्चाई जान लेनी चाहिए कृषी व्यवसाय ही हमारा प्राथमिक व्यवसाय है। कोरोना के बाद लोग अपने आपको अगर सुरक्षित रखना चाहते है तो अपने गांव कि खेती को ही सुरक्षित व्यवसाय समझे ताकी हमारे अपना अच्छा जीवन बिता सके ।

महात्मा गांधी के ठंबा जव टपससंहम विचार हि हमें नया उत्साह दे सकते है। जीनेकी राह बता सकता है। हमें छोटे खेत किसान और खाद्य उत्पादकों कि रक्षा करने के लिए प्रयास करना है। सुपर मार्केट, स्मार्ट सिटी के बजाय खेती, बाजार, म्हार्ट विलेज कें बारे मे सोचना है। योजना तैयार करनी है। हमारा भाग्य है, देश में खाद्य संकट नही है। किसान एक सच्चा कर्मयोध्दा है। जो उत्पादन को बारीश, सुखा, बाढ, महामारी किसी भी विपरीत परिस्थितीओं में भी उत्पादन जारी रखते है । कोरोना महामारी के समय जब निर्माण से लेकर सर्विस तक सब लॉकडाऊन है। तब भारत कि अर्थव्यवस्था

एक हि स्तंभ है। जो इस देश को स्थिरता और लडने कि शक्ती प्रदेान करता है । वह है खेत में काम करने वाला हमारा किसान भाई है। कोविड–१९ के समय बाद में कृ षी क्षेत्र हि हमारे भारत का भविष्य उज्वल बना सकता है। भारतीय अर्थव्यवस्था को अच्छी तरह से चला सकता है ।

सरकार कृषी क्षेत्र को जारी संकट से उबरने के कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर सकती है ।

१. कोरोना वायरस के कारण किसानो का नुकसान हुआ उसे ध्यानमे रखते हुए सरकार राष्ट्रीय आपदा राहत फंड से क्षति पूर्ती राशी प्रदान करें।

२. जिन फसलों के दाम में भारी गिरावाट आई है। ऊन पर भावांतर योजना के तहत भरपाई कि राशी दी जाए।

३. किसानो को तालाबंदी के कारण हुए आर्थिक नुकसान कि भरपाई कि ज सके।

४. किसानो कि १ वर्ष कि बिजली के बिल व्यवस्था करनी चाहिए।

५. कृषी उत्पादनोको संभावित उपभोक्ताओं तक पहुचाने के लिए सरकारी प्रयत्न हि करते होगे। ई कॉमर्स कंपनीया बडी भूमिका निभा सकती है।

६. सरकार को हर गांव स्तरपर फसलो कि खरीददारी कि व्यवस्था बनाने कि जरुरत है।

७. किसानो के कर्ज पर लगने वाले व्याज को रोका जाए।

८. गाव मे वापर लौट आनेवाले मजदुरो को मनरेगा के अंतर्गत रोजगार गारंटी का लाभ दिया जाए इससे कृषी पर अतिरिक्त दबाव कम होगा।

९. देशवासियों ने कृषी व्यवसाय के बारे मे अपनी मानसिकता बदलनी चाहिए।

ताकी कोवीड–१९ के जारी संकट को कृषी क्षेत्र के लिए एक बडे अवसर में भी जारी संकट को कृषी क्षेत्र के लिए एक बडे अवसर में भी बदला जा सकता है। गांव में गांव आधारित कृषी उद्योग का एक बडा मॉडल बनाया जा सकता है। यदि हम यह कर सके तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। ताकी आने वाले भविष्य में गाँव के लोगो का शहरी आकर्षण कम होगा। हम शहरीकरण कि समस्या को रोक सकेंगे, गाँव में रहो सुरक्षित रहो।

संदर्भ संकेत :-

१ अर्थशास्त्र विश्वकोष (आर्थिक पर्यावरण)— डॉ. माथुर बी.एल. (अर्जुन पब्लिकेशन हाऊस)

२ अर्थशास्त्र विश्वकोष (आर्थिक उच्चावचन) डॉ. माथुर बी.एल. (अर्जुन पब्लिकेशन हाऊस)

३ कोविड— १९ संकट में भार : From hindi theprint-in deliver lecture, योंगेंद्र यादव २२ एप्रिल २०२०

४ वश्त्तपत्र दृदैनिक जागरण.

ज्योतीचंद्र पब्लिकेशन, लातूर.

ISBN नंबर नुसार पुस्तक प्रकाशनाची सुवर्ण संधी

वैशिष्ट्ये :-

१) विद्यार्थी, संशोधक, प्राध्यापक व इतर लेखकांचे पुस्तक 'ना नफा ना तोटा' या तत्त्वावर ISBN नंबर नुसार प्रकाशित करणे.

२) संशोधक, प्राध्यापक यांच्या M.Phil, Ph.D. संशोधनात्मक पुस्तकांना विशेष प्राधान्य.

३) यु.जी.सी. च्या नवीन मार्गदर्शक तत्त्वानुसार उच्च शिक्षणामध्ये कार्यरत संशोधनार्थी व प्राध्यापक यांना आपले पुस्तक ISBN नुसारच प्रकाशित करणे आवश्यक आहे. तरी, संशोधनार्थी व प्राध्यापक यांनी आपले मौलिक साहित्य ISBN नुसार प्रकाशित करून घ्यावे, ही विनंती.

- संपर्कासाठी पत्ता -

प्रकाशक,
ज्योतीचंद्र पब्लिकेशन
"ग्यानदेव-पार्वती", R-9/139/6, विशाल शाळेजवळ,
एल.आय.सी. कॉलनी, प्रगती नगर, लातूर.
ता. जि. लातूर - 413531.(महाराष्ट्र),भारत
ऑफिस फोन नं. - 02382 - 241913
मो. नं.9423346913, 9503814000, 9637935252, 7276301000